लेह-लद्दाख को अशांत करने का विदेशी षड्यंत्र

प्रो . विवेकानंद तिवारी

लद्दाख, जिसे अब तक शांति, बर्फीली चोटियों, बौद्ध मठों और रणनीतिक महत्व के लिए जाना जाता था, अचानक हिंसा और तनाव की आग में झुलस उठा. 24 सितंबर को लेह की सड़कों पर जो दृश्य सामने आए, उन्होंने पूरे देश को चौंका दिया. पताकों और प्रार्थना-मंत्रों से सजी घाटियों में आग, पत्थरबाज़ी और मौत का साया मंडराता दिखा. और इस पूरे बवाल के केंद्र में खड़े हैं-सोनम वांगचुक.लद्दाख की हिंसा महज एक स्थानीय मांग का परिणाम नहीं मानी जा रही. विपक्षी दलों से जुड़े समूहों ने इसे सोशल मीडिया पर बड़ा मुद्दा बना दिया. वांगचुक को %आधुनिक गांधी% बताकर कैंपेन चलाए गए.

सरकार समर्थक तबका मानता है कि यह एक सोची-समझी साजि़श थी ताकि देश की संवेदनशील सीमाई ज़मीन पर अस्थिरता फैलाई जा सके. वहीं, समर्थकों का तर्क है कि असली मुद्दों को दबाने के लिए %विदेशी हाथ% का बहाना बनाया जा रहा है. यह केवल प्रशासनिक असंतोष का विस्फोट नहीं था, बल्कि सुनियोजित षड्यंत्र की पटकथा थी. भीड़ ने चुन-चुन कर सरकारी दफ्तरों को निशाना बनाया, बीजेपी कार्यालय तक को नहीं छोड़ा. और अब सरकार ने इस षड्यंत्र के पीछे छिपे चेहरों को बेनकाब करना शुरू कर दिया है.

सबसे बड़ा प्रश्न यही है कि इतनी बड़ी भीड़ अचानक कहां से जुट गई? यह कोई स्वस्फूर्त जनाक्रोश नहीं था. सुरक्षा सूत्रों ने स्पष्ट किया कि उपद्रवियों को बाहर से लाया गया. यह भीड़ स्थानीय असंतोष का प्रतीक नहीं, बल्कि सुनियोजित भीड़-राजनीति का हथियार थी. चुने हुए सरकारी दफ्तरों पर हमला और चिह्नित स्थलों को आग के हवाले करना इस बात का प्रमाण है कि उपद्रवियों के पास पूर्व-निर्धारित नक्शा और आदेश था.

लेफ्टिनेंट गवर्नर कविंद्र गुप्ता ने सुरक्षा अधिकारियों के साथ उच्चस्तरीय बैठक के बाद स्पष्ट कहा कि यह लद्दाख को जलाने की साजिश थी. उनका यह बयान बताता है कि यह हिंसा केवल सामाजिक या आर्थिक शिकायतों का परिणाम नहीं थी, बल्कि कुछ राजनीतिक दलों और संगठित गिरोहों का साझा षड्यंत्र था. लोकतंत्र में असहमति का अधिकार है, परंतु लोकतांत्रिक असहमति और हिंसक षड्यंत्र में स्पष्ट भेद होता है.

हिंसा की पृष्ठभूमि में सबसे बड़ा नाम आया है पर्यावरण और शिक्षा के नाम पर मशहूर बने सोनम वांगचुक का. गृह मंत्रालय ने उनके हलह का स्नष्टक्र पंजीकरण रद्द कर दिया है. इसका सीधा अर्थ यह है कि अब यह संगठन विदेश से कोई भी चंदा नहीं ले सकेगा. सरकार की जांच में वित्तीय गड़बडि़यों और मनी लॉन्ड्रिंग जैसे गंभीर आरोपों के सबूत मिले. 20 अगस्त को ही हलह को नोटिस भेजा गया था, परंतु दिए गए जवाब ने अनियमितताओं पर कोई संतोषजनक सफाई नहीं दी. इस प्रकार, केंद्र ने कानून का पालन करते हुए हलह पर कठोर प्रहार किया, ताकि विदेशी धन के सहारे आग लगाने वालों की जड़ें काटी जा सकें.

गृह मंत्रालय ने साफ कहा है कि सोनम वांगचुक हिंसा भड़काने के दोषी हैं. उन्होंने भूख हड़ताल को अंत तक खींचा, जबकि कई नेताओं ने उन्हें रोकने की अपील की थी. वे केवल सामाजिक मांग नहीं रख रहे थे, बल्कि अरब स्प्रिंग का उदाहरण देकर लोगों को उकसा रहे थे. उन्होंने नेपाल में चल रहे ल्ह्वठ्ठं विरोध प्रदर्शनों का हवाला दिया और युवाओं को हिंसक तरीके से सड़क पर उतरने का संदेश दिया. यही नहीं, उनके उत्तेजक भाषणों से भीड़ अनशन स्थल से उठी और सरकारी दफ्तरों व राजनीतिक कार्यालयों पर टूट पड़ी. यह महज संयोग नहीं, बल्कि पूर्व-नियोजित सामाजिक विद्रोह की साजिश थी. अरब स्प्रिंग शब्द का इस्तेमाल साधारण नहीं था.

पश्चिम एशिया में इस आंदोलन ने कई देशों को अस्थिरता, गृहयुद्ध और आतंक के दलदल में धकेला. वहीं, नेपाल में हाल ही में आंदोलन ने राजनीतिक अस्थिरता की नई लहर पैदा की है. वांगचुक द्वारा इन उदाहरणों का उपयोग, उनके वास्तविक इरादों को उजागर करता है. लद्दाख को भी वैसा ही अस्थिर मैदान बनाना, जहां सामाजिक मांगों की आड़ में राष्ट्रविरोधी तत्व फलें-फूलें.

लद्दाख सिर्फ भौगोलिक सीमांत नहीं है. यह भारत की सामरिक सुरक्षा का प्रहरी है. कारगिल से लेकर गलवान तक. यहां की अस्थिरता सीधे-सीधे चीन और पाकिस्तान को लाभ पहुंचा सकती है. यही कारण है कि बाहरी फंडिंग, विदेशी हलह और भड़काऊ भाषणों के जरिए भारत के सबसे संवेदनशील क्षेत्र को हिलाने का प्रयास हुआ. सरकार की यह कार्रवाई केवल एक हलह पर रोक नहीं है, बल्कि विदेशी फंडिंग से उपजी अस्थिरता पर निर्णायक प्रहार है. यह संदेश भी है कि भारत अब %अरब स्प्रिंग% या %नेपाल शैली% के प्रयोगों को अपनी धरती पर सफल नहीं होने देगा.

कई हलह की गतिविधियों में चीन की नीतियों के अनुरूप स्थानीय असंतोष को हवा देने के संकेत मिले हैं. विदेशी फंडिंग के माध्यम से सॉफ्ट पावर की आड़ में हार्ड एजेंडा चलाया जा रहा है. यह कोई नई रणनीति नहीं है. चीन-तिब्बत नीति से लेकर नेपाल में बढ़ते प्रभाव तक, बीजिंग लगातार सीमा क्षेत्रों में अस्थिरता का बीज बोने का प्रयास करता रहा है. लेह की हिंसा में इसी नीति की छाया साफ दिखाई देती है. लेह की हिंसा ने यह स्पष्ट कर दिया है कि भारत के विरोधी तत्व अब सूचना युद्ध और भीड़ युद्ध दोनों का सहारा ले रहे हैं.

नेपाल कनेक्शन इस बात का प्रतीक है कि सीमा पार ताकतें भारत की आंतरिक एकता को चोट पहुंचाने में लगी हैं. समाधान केवल पुलिसिया कार्रवाई नहीं है, बल्कि जन-जागरूकता, राजनीतिक शुचिता और सांस्कृतिक सतर्कता का सामूहिक प्रयास है. भारत की सीमाएं केवल भौगोलिक नहीं, बल्कि सभ्यतागत हैं, उन्हें जलाने की कोशिश चाहे लेह में हो या काठमांडू में या बीजिंग से प्रेरित, उसका उत्तर केवल भारतीय एकता और सजगता ही दे सकती है.

विकास की खंडित दृष्टि का परिणाम हैं आज की वैश्विक समस्याएं

कृष्णमोहन झा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने कहा है कि अगर हमें विश्वगुरु और विश्वामित्र बनना है तो हमें अपने दृष्टिकोण के आधार पर अपना रास्ता खुद बनाना होगा लेकिन हम आंख मूंद कर आगे नहीं बढ़ सकते. सौभाग्य से हमारा दृष्टिकोण पारंपरिक है. जीवन के प्रति यह दृष्टिकोण सनातन है. यह दृष्टिकोण हमारे पूर्वजों के हजारों वर्षों के अनुभवों से आकार लेता है. विगत कुछ माहों में अमेरिका ने व्यापार शुल्क और आव्रजन संबंधी जो घोषणाएं की हैं उसे देखते हुए संघ प्रमुख के इस बयान को अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है. उल्लेखनीय है कि हाल में ही न ई दिल्ली में संघ के त्रिदिवसीय कार्यक्रम में दिए गए अपने उद्बोधन में भी मोहन भागवत ने इस बात पर विशेष जोर दिया था कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार किसी तरह के दबाव में नहीं होना चाहिए. भागवत ने दो टूक लहजे में कहा था कि दुनिया सौदों और अनुबंधों से नहीं बल्कि एकजुटता से चलती है.

संघ प्रमुख ने एक पुस्तक के विमोचन समारोह में मुख्य अतिथि की आसंदी से कहा कि भारत और अन्य देश आज जिन समस्याओं का सामना कर रहे हैं वह उस व्यवस्था का परिणाम है जो विगत दो हजार वर्षों से सुख और विकास के खंडित दृष्टिकोण पर आधारित है. संघ प्रमुख ने कहा कि वर्तमान हालातों से बाहर निकलने के लिए हमें सनातन दृष्टिकोण का पालन करते हुए अपना रास्ता खुद बनाना होगा. संघ प्रमुख ने अपनी इस बात को रेखांकित किया कि जो जरूरी है वो करना ही होगा लेकिन हम आंख मूंद कर आगे नहीं बढ़ सकते. संघ प्रमुख ने कहा कि हम इन हालात से बाहर निकलने का रास्ता खोजने में सक्षम हैं लेकिन भविष्य में हमें फिर इस स्थिति का सामना करना पड़ सकता है क्योंकि इस खंडित दृष्टि में मैं और बाकी दुनिया या हम और वे की सोच रहती है. संघ प्रमुख ने अपने भाषण में तीन वर्ष पूर्व एक अमेरिका के एक प्रमुख व्यक्ति के साथ हुई बातचीत का उल्लेख करते हुए बताया कि उन्होंने सुरक्षा, अर्थव्यवस्था, आतंकवाद निरोध सहित अनेक क्षेत्रों में भारत और अमेरिका के बीच सहयोग और सहभागिता की संभावनाओं की बात की लेकिन उनका जोर केवल इस बात पर था कि इससे

अमेरिका के हित प्रभावित नहीं होना चाहिए. संघ प्रमुख ने किसी का नाम लिए बिना कहा कि हर किसी के अलग-अलग हित हैं इसलिए यह टकराव तो चलता रहेगा. सिर्फ राष्ट्रीय हित मायने नहीं रखते. मेरा अपना भी हित है. मैं सब कुछ अपने हाथ में रखना चाहता हूं.हमें इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए ही अपना रास्ता खुद बनाना होगा. संघ प्रमुख ने कहा कि धर्म अर्थ काम और मोक्ष , इन्हीं जीवन मूल्यों के आधार पर समाज का संतुलित विकास संभव है. संघ प्रमुख ने कहा कि भारत को जीवन के चार लक्ष्यों धर्म अर्थ काम और मोक्ष के सदियों पुराने दृष्टि कोण का पालन करना चाहिए जो धर्म से बंधा हो और यह सुनिश्चित करता हो कि कोई पीछे न रहे. भागवत ने अर्थ और काम को जीवन में अनिवार्य बताते हुए कहा कि इनका धर्म से बंधे होना आवश्यक है. संघ प्रमुख ने जोर देकर कहा कि भारत ही एक मात्र ऐसा देश है जिसने पर्यावरणीय प्रतिबद्धताओं को पूरी तरह निभाया है. उन्होंने कहा कि अगर हमें हर टकराव में लड़ना होता तो हम 1947 से लगातार लड़ते रहते लेकिन हमने यह सब सहन किया . हमने कई बार उन लोगों की भी मदद की जो हमारी नीतियों का विरोध करते थे.

व्यंग्य

वफादारी का सिला .....

रवि उपाध्याय
लेखक व्यंगकार और राजनीतिक समीक्षक हैं)

सुप्रीम कोर्ट ने स्ट्रीट डॉग्स आवारा कुत्तों को लेकर जो फैसला दिया गया उससे डॉग लवर्स में तो हलचल मची ही दुनिया में सबसे वफादार कौम के लिए मशहूर डॉग कम्युनिटि में भी निराशा छा गई . सब श्वान यही सोच रहे थे कि पौराणिक काल से चली आ रही हमारी वफादारी का क्या यही पुरस्कार है ? क्या यही न्याय के मंदिर का न्याय है ?

पिछले दिनों कोर्ट के इसी फैसले से त्रस्त शहर भर के स्ट्रीट डॉग्स ने एक विशाल आपातकालीन बैठक का आयोजन किया . देशी कुत्तों की उक्त बैठक में शेरा नाम के श्वान ने दुखी मन से कहा कि साथियों, सबसे दुर्भाग्य जनक बात तो यह है कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा हम वफादारों के खिलाफ यह फरमान उस समय सुनाया गया जब सारा देश,आजादी की 79 वीं वर्षगांठ मनाने की तैयारियां कर रहा था . तब सुप्रीम कोर्ट ने चंद सिरफिरे हिंसक कुत्तों द्वारा कुछ लोगों को काटे जाने पर यह मामला सु-मोटो यानि स्वेच्छा से सुनवाई में ले लिया और टॉप प्रियॉरिटी पर लेकर यह फरमान सुना डाला . अब सवाल यह है कि क्या किसी एक श्वान के अपराध की सजा उसके समूचे समाज को दी जा सकती है ? यह कौन सा न्याय है ? जहाँ जिंदा इंसानों के लाखों केस की फाइलें दशकों से कोर्ट के रिकॉर्ड रूम में धूल फांकती हुई साल दर साल दिन दूनी चार गुना की स्पीड से नए-नए रिकॉर्ड बना रहीं हैं . ऐसे में मी लार्ड आपका यह आदेश क्या यह उन आदमियों और हमारे साथ न्याय है ?

शेरू के बाद बोलते हुए भूरिया नामक देशी श्वान ने कहा भाइयों यह अन्याय है यह सरासर ना इंसाफी है . एक तरफ तो सरकारें स्वतंत्रता दिवस, 15 अगस्त पर जेलों में सजा काट रहे कैदियों की सजा माफ कर के जेलों से छोड़ती है . वहीं दूसरी तरफ वही अदालतें हमें सड़कों से हटाने का आदेश दे रहीं हैं . इस आदेश के बहाने की आड़ में तो जो हमसे नफरत करते हैं वे हमें जहर देकर या पत्थर मार-मार कर जिंदा ही मार डालेंगे . शेरू ने कहा साथियों ये तो हमारे खिलाफ एक तरह से तालिबानी सज़ा होगी . इसके खिलाफ हम सब को एक होना होगा . वैसे भी एक तबका ऐसा भी है जो हम से बेइंतहा नफरत करता है .

मोती ने कहा कि दोस्तों ये समझ लीजिए कि हम सब इस देश के मूल निवासी हैं और अब तक हम लोगों द्वारा फेंके गए टुकड़ों पर पलते हैं .भाइयों हम महाभारत काल में भी थे और आज भी हैं . विदेशी नस्ल के स्वान हम देशी मूल निवासी स्वानों पर भारी हैं . देश का एक तबका विदेशियों की नस्ल पर फिदा है . कालू नामक स्वान ने कहा भाइयों हमने यह अपने ही देश में देखा है कि प्राचीन समय में हमने विदेशियों के प्रति जो सहानुभूति बरती उसी का नतीजा रहा है कि हम 800 वर्षों तक उनके गुलाम रहे हैं . सम्मेलन में बोलते हुए एक अन्य स्वान भूरिया ने एकलव्य के बाणों को अपने मुंह पर झेल कर उसे अर्जुन की भांति एक श्रेष्ठ तीरंदाज बनाने में अपना खून बहाया है . हम सदियों से खेत, खलिहान बस्तियों और घरों की रखवाली करते चले आ रहे हैं . बड़ी बड़ी हवेलियों और सरकारी बंगलों में रहने वाले हमारी पीड़ा क्या और क्यों जानेंगे, जो हजारों रुपए खर्च कर खूंखार विदेशी कुत्तों को पालते पोषते हैं .और अंत में वही विदेशी नस्लों के डॉग अपने मालिकों पर ही हमला कर उनकी जान ले लेते हैं द्य कम से कम हम तो इतने नकम हराम नहीं हैं जो अपने मालिकों पर हमला करते हों द्य हाँ जब हम को बिना कारण परेशान किया जाता हैं तब अपनी आत्म रक्षा में जरूर ऐसी घटना हो जाना सामान्य बात है . आत्म रक्षा का जितना अधिकार आदमी को है उतना अधिकार तो हमको भी है .

टायगर नामक श्वान ने कहा सड़कों से हटाने के कई अर्थ निकलते हैं . इस पर कोर्ट मौन रहा कि सड़कों से हटा कर कहाँ भेजा जाए ? बाद में कोर्ट ने लोकल बॉडीज़ को कुत्तों को एंटी रेबीज़ वैक्सीन लगाने और शेल्टर होम बनाने के लिए निर्देश दे कर हम वफ़ादारों पर बड़ी मेहरबानी की है . लेकिन हमारा एक सवाल भी है कि लोकल बॉडीज सड़कों पर डेरा जमाए बैठीं गाय भैंसों को तो हटा नहीं पा रही हैं . वहीं दूसरी तरफ नेता कांजी हाउस में पशुओं का चारा खुद ही उड़ा रहे हैं और गाय सड़कों पर कूड़ा कचरा खाती फिर रहीं हैं . ऐसे में लोकल बॉडीज़ में मौजूद जन प्रतिनिधि पहले अपना पेट भरेंगी या हमारा द्य यह वह देश है जहाँ पशुओं चारा नेता खा रहें हैं, गौशालाओं में गाय भूखों मर रहीं है उनके संचालक अमीर बनते जा रहे हैं द्य इनको वफ़ादारी सीखना है तो हम से सीखें द्य हम बरसात हो या ठंड या गर्मी अपने मालिक के दरवाजे पर पड़े रह कर उसके और उसके परिवार के प्रति वफादार होते हैं द्य इसी समस्या पर विचार करने के लिए सिटी से कहीं दूर एक बड़े से खाली मैदान में बड़ी संख्या में देशी कुत्ते मीटिंग के लिए एकत्रित हुए . इस इमरजेंसी बैठक में संघों शक्ति कल युगे के मंत्र को ध्यान में रखते हुए शेरू नामक कुत्ते को अध्यक्ष चुन लिया गया . इस पर शेरू ने वहां मौजूद कुत्तों का अभिवादन करते हुए कहा कि उम्मीद है कि आप सभी मुझे अध्यक्ष बनाए जाने पर सहमत होंगे . सभी श्वानों ने इस पर सहमति व्यक्त करते हुए कहा कि हम सभी सहमत हैं . हम और मनुष्यों में यही अंतर है . हम न तो पद के लालची और न ही पैसों के .हम वफादारी के साथ शेरू भैया हम पूरी तरह आप के साथ हैं .

डॉटर डे विशेष

बेटियों का सम्मान, कल का निर्माण

पत्रकार सय्यद असीम अली

हर साल डॉटर डे बेटियों के महत्व, उनके योगदान और उनके प्रति भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर देता है. यह सिर्फ औपचारिक शुभकामना का दिन नहीं, बल्कि आत्ममंथन का भी क्षण है कि हम बेटियों के लिए कैसा वातावरण और भविष्य तैयार कर रहे हैं.

लेखक पत्रकार सय्यद असीम अली कहते हैं, आज मैं अपनी बेटी अमानह और इस संसार की हर बेटी को हृदय से डॉटर डे पर हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ. बेटियाँ ईश्वर का सबसे सुंदर उपहार हैं — उनकी मासूमियत, उनकी मुस्कान, उनकी संवेदनशीलता और उनकी जिज्ञासा जीवन को एक नया अर्थ देती है. वे घर की रौनक, संस्कारों की वाहक और भविष्य की नींव होती हैं.

नई सुबह का प्रतीक- बेटी का जन्म परिवार के लिए एक नई सुबह का उदय होता है. जैसे सूरज की पहली किरण घर में रोशनी भर देती है, वैसे ही बेटी का आगमन हर कोने को खुशी और उत्साह से भर देता है. वह परिवार की धड़कन होती है और समाज को दिशा देने वाली शक्ति भी.

उम्मीदों की किरण- अमानह और दुनिया की हर बेटी मासूम मुस्कान, बड़े सपनों और उवल भविष्य की तस्वीर हैं. बेटियाँ स्नेह, विश्वास, जिम्मेदारी और संबल की आधारशिला होती हैं. वे कठिनाइयों का सामना करने का साहस देती हैं और प्रेरणा का स्रोत बनती हैं.

भारत की बेटियाँ-साहस और प्रेरणा की प्रतीक- भारत का इतिहास रानी लक्ष्मीबाई, सावित्रीबाई फुले, किरण बेदी, नीरजा भनोट, लता मंगेशकर, मैरी कॉम, कल्पना चावला, अरुणिमा सिन्हा और पी. वी. सिंधु जैसी बेटियों के साहस, सेवा और उपलब्धियों से भरा है. ये भारत की बेटियाँ आने वाली पीढ़ियों के लिए सशक्तिकरण का मार्ग आलोकित करती हैं.

सरकार की योजनाएँ- बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, लाड़ली लक्ष्मी, सुकन्या समृद्धि और बालिका समृद्धि जैसी योजनाएँ बालिकाओं के जन्म, शिक्षा और आर्थिक सुरक्षा को बढ़ावा देती हैं. इनसे समाज में बेटी के प्रति सोच भी सकारात्मक हो रही है.

डॉटर डे पर संकल्प- डॉटर डे हमें यह संकल्प लेने की प्रेरणा देता है कि —

- बेटियों को शिक्षा के पूर्ण अवसर देंगे.
- उनके सपनों को पंख देंगे.
- समाज में उन्हें बराबरी और सम्मान देंगे.
- उनकी सुरक्षा और स्वतंत्रता को सर्वोच्च प्राथमिकता देंगे.
- घर की धड़कन, समाज की आत्मा

बेटियाँ सिर्फ घर की शोभा नहीं, बल्कि समाज की आत्मा और भविष्य की नींव हैं. उनकी संवेदनशीलता और मेहनत समाज में करुणा, सहयोग और नई ऊर्जा का संचार करती है. बेटियों का सम्मान और सशक्तिकरण ही एक सुंदर, न्यायपूर्ण और संतुलित विश्व की सबसे बड़ी गारंटी है.

अमानह और सभी बेटियों के लिए संदेश- प्रिय अमानह और विश्व की सभी बेटियाँ, तुम्हारा अस्तित्व इस दुनिया को खूबसूरत बनाता है. तुम्हारे भीतर वह शक्ति है जो दुनिया को बदल सकती है. उड़ान भरो, आगे बढ़ो, और यह मत भूलो कि तुम्हारी मुस्कान किसी के लिए जीवन की सबसे बड़ी उम्मीद हो सकती है.

कवितामय अर्पण

बेटी,
तू सुबह की पहली किरण है,
तू घर का मधुर तराना है.
तेरी हंसी में बसा है सारा जहाँ,
तेरी आँखों में भविष्य का अफसाना है.

अमानह और दुनिया की हर बेटी,
तुम्हें सलाम, तुम्हें प्रणाम.
तुम हो तो यह जीवन है,
तुम हो तो यह संसार महान.

सतयुग के स्वाद का रसपान करने के लिए वैयक्तिक स्तर पर कार्य करना होगा . मन को जितना अधिक आत्म रमणातीत बनाएंगे, स्वयं को सतयुग में ही पाएंगे .बाकी कलयुग की पराकाष्ठाओं से साक्षात्कार तो दु :ख और पीड़ाओं में ही रमण करायेगा . जितना जल्दी जागें, उतना जल्दी सवेरा . शुभकामनाएं . . . .

युग का कालखंड

संदीप खमेसरा

सतयुग से कलयुग और पुन: सतयुग की स्थापना की कई बातें होती हैं. कई सारे मत मतांतर अपने अपने दर्शन के हिसाब से इसकी व्याख्या करते हैं. मोटे रूप से यही समझ आता है कि सतयुग यानि चहुं ओर धर्म, शांति, प्रसन्नता और संतोष का अनुभव और कलयुग यानी अधर्म, दु:ख और पीड़ा का. गहराई में इसका विश्लेषण करें तो पाएंगे कि प्रत्येक युग में हर युग के अनुभव कम या अधिक मात्रा में हमेशा मौजूद रहे हैं. सतयुग में भगवान विष्णु ने मत्स्य, कूर्म (कच्छप), वराह, और नृसिंह के रूप में अवतार लिए थे. इन अवतारों का उद्देश्य वेदों की रक्षा करना, पृथ्वी को प्रलय से बचाना और अधर्म का नाश कर धर्म की स्थापना करना था. यानि अधर्म का डंका तो इस युग में भी बजता ही था. शंकासुर और हिरण्यकश्यप जैसे अनेकानेक असुरों का इस कालखंड में वर्चस्व था, जिन्हें समाप्त करने, ईश्वर को तब अवतार लेना पड़ा था.

त्रेतायुग में भी अनेक आसुरी शक्तियों का वर्णन है, जो ऋषि मुनियों के हवन पूजन में व्यवधान पैदा करते थे. इसमें रुकावट न आए इसके लिए दशरथ जी से ऋषि विश्वामित्र ने राम का संरक्षण मांगा था. भगवान राम और लक्ष्मण ने तब कई राक्षसों का वध किया. रावण, कुंभकरण, मेघनाथ जैसे महाविनाशकारी असुर भी इसी युग की देन थे. इस कालखंड में भी लूट, अपहरण, हत्याएं जैसे अपराध प्रचुर मात्रा में देखे गए थे.

द्वापरयुग में छल कपट और अधर्म का और भी वीभत्स रूप सामने आया. कंस, दुर्योधन, दुशासन, शकुनि, जरासंध जैसे महाबलशाली और धूर्त लोगों का वर्चस्व था. धर्म की स्थापना के लिए भगवान कृष्ण का अवतरण हुआ. अब कलयुग में... !? इसमें भी आसुरी प्रवृतियां बलवती हो रही हैं. कितना नीचे तक गिरना शेष है, पता नहीं. भगवान कल्कि के अवतार का इंतजार है !सभी युगों में अधर्म भी है और धर्म की पुनर्स्थापना का विकल्प भी. फिर इन युगों में अंतर क्या है? क्या बदल जाने से युग बदल रहा है? सोचिए, बदल क्या रहा है? बदल रहा है केवल मानव स्वभाव और उस बदले हुए स्वभाव का प्रकृति पर

असर ! और यह बदलाव सौ, दो सौ वर्षों में नहीं होता. छोटे से बदलाव में भी पांच सात पीढ़ियां लगती हैं. यानि अमूमन पांच सौ से हजार वर्ष !

सतयुग में प्रकृति मेहरबान है, क्योंकि उससे कोई छेड़ छाड़ नहीं है. खूब धान है, पशुधन है. दूध और घी की नदियां बह रही हैं. पर्याप्त इतना है कि खत्म ही नहीं होता. लोग एक दूसरे को बांटने को आतुर हैं. बचाने का कोई लोभ है नहीं. सबके पास इतना है कि किसी अन्य से द्वेष नहीं. शुद्धता इतनी कि सब स्वस्थ हैं. सबने उम्र लंबी पाई है. ऐसे में सब ओर सुख, प्रसन्नता और संतोष का ही साम्राज्य है. सतगुण की अधिकता है. बस मानव मन की इस दशा का नाम ही सतयुग है !

फिर, त्रेता में कुछ स्पर्धा है. तुलनात्मक हो जाने से कम ज्यादा का बोध है. फिर भी मर्यादा है. सम्मान और प्रेम भी है. प्रजापालकों का उत्तम आचरण है. धर्म का आधार है. कर्तव्यनिष्ठा और समर्पण का भाव है. हिंसा के दमन का प्रयास है. ईश्वरीय सत्ता में आस्था है. सतोगुण और रजोगुण की सम्पन्नता है. यही त्रेता की महिमा है !

द्वापर में छल कपट, द्वेष और अधर्म अधिक है. अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति की बलि है. साम्राज्य के विस्तार की मानसिकता के चलते युद्ध और अनीति है. रजोगुण से भी अधिक तमोगुण की प्रबलता है. मनुष्य की इस सोच का बदलाव ही द्वापर का द्वार है !

कलयुग में प्रकृति का विनाश है. आधुनिकता के अंधानुकरण में जल, थल और नभ पर गैर जिम्मेदाराना अतिक्रमण है. हो?ा हो?ी में अपने पराए का, अपने स्वयं के भविष्य का भी कोई मोल नहीं. मानव ही मानव का दुश्मन है. तामसिक प्रवृत्तियां प्रचुरता में व्याप्त हैं. मानसिकता का यह नंगा नाच ही तो कलयुग को अभिव्यक्त कर रहा है ! धरती वही, आकाश वही. सूरज, चांद और तारे वही. बदला तो केवल मनुष्य ही है ना. पशु पक्षी भी केवल पेट भरने के लिए मजबूरीवश बदले. हमने उनके इलाके खत्म कर दिए, तो वे भूख मिटाने हमारे इलाकों से भोजन की जुगत बिठाने लगे. क्या मनुष्य की मानसिकता ही एकमात्र पैमाना नहीं है युग के निर्धारण का !? अब हमारी अपेक्षा क्या है? पुन: सतयुग आए. लाखों वर्षों के मानसिक रूपांतरण से गुजर कर आते आते आज हम जिस मुकाम पर खड़े हैं, वहां से तत्काल मानसिकता में आमूलचूल परिवर्तन कर डालना, क्या बहुत बड़ा ख्वाब नहीं है? जब युग के निर्धारण में केवल मानव की मानसिकता की भूमिका है, तो बिना उसके बदले क्या युग परिवर्तन संभव है?

श्वान (कुत्ते) की दुम से भी अधिक टेढ़ी है, मनुष्य की मानसिकता. इसे सही दिशा देने के लिए हजारों वर्षों का प्रयास चाहियेगा. पीढ़ी दर पीढ़ी, समूची आनुवंशिक और वंशानुगत वृत्ति को बदले बिना यह संभव नहीं होगा. कोरोना काल के समय का ठहराव मानसिकता में आंशिक बदलाव का कारण बना था. लेकिन बाद गुजरने मियाद, सब कुछ उससे बढ़ चढ़ कर हो गया. मानव मन को केवल एक बहाव चाहिए होता है. ऊपर या नीचे बहाव की दीर्घकालिक निरंतरता ही उसके स्वभाव में परिवर्तन लाती है.